ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

इस्लाम धर्म में पुनरुत्थान : एक विवेचन

मेघना सोनी
शोध छात्रा,
दर्शन शास्त्र विभाग,
जय नारायन व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में इस्लाम धर्म में पुनरुत्थान की अवधारण को विवेचित किया गया है। इस्लाम धर्म में मनुष्य की मृत्योपरांत अवस्था को भी जिंदगी/जीवन ही स्वीकार किया गया है जिसे मानव की उच्चतर अवस्था के रूप में माना गया है। कयामत के दिन कब्रिस्तान में मुर्दे पुनः उठ जाते है उसके पश्चात् उन्हें ईश्वर से न्याय प्राप्त होता है तथा मनुष्य को अपने सीरत व कर्मों के अनुसार पुरस्कार के रूप में स्वर्ग तथा दंड के रूप में नरक प्राप्त होता है।

मुख्य शब्द : इस्लाम धर्म, पुनरुत्थान, पारलौकिकता, एकेश्वरवाद, बरज़ख, आखिरत, अजाब कुफ्र, मुकर, नकीर, गिल्यान, जहन्नुम।

प्रस्तावना

मनुष्य अपने अनुभवों द्वारा विश्व तथा जीवन की यथार्थता को जानने के लिए निरन्तर तर्क तथा बुद्धि को तीक्ष्ण करता रहा है। प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों ही विषयों के प्रति वह जिज्ञासु बना रहता है। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? मृत्यु पश्चात् जीवन है अथवा नही? इन सब प्रश्नों के उत्तर मनुष्य ने खोजने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में इस्लाम धर्म के परिप्रेक्ष्य में विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

इस सृष्टि में मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है जो प्रकृति में विद्यमान रहस्यों को खोजने में आदिकाल से ही प्रयत्नरत है। स्वयं प्रकृति से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयत्न विभिन्न धर्म व दर्शनों ने उचित व तार्किक रीति से देने का प्रयत्न किया है परन्तु फिर भी वर्तमान में हम यह नहीं कह सकते कि दिया गया उत्तर पूर्ण है। मनुष्य द्वारा स्वयं को जानने की जिज्ञासा के फलस्वरूप ही अनेक धर्म व दर्शन विकसित हुए है। सृष्टि की रचना से अब तक एक यात्री के रूप में मनुष्य ने अपनी यात्रा की है जिसकी अपने अनुभव अथवा तर्क की कसौटी पर अनेक सिद्धांत देने का प्रयास किया है उसी प्रयास में इस्लाम धर्म द्वारा दिए गए सिद्धांत है जो मनुष्य के वर्तमान व मृत्योपरांत जीवन से सम्बन्धित है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र इस्लाम धर्म द्वारा मनुष्य जीवन के पारलौकिक जीवन संबंधी प्रश्न के समाधान के उद्देश्य पर केन्द्रित है।

इस्लाम धर्म द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों में मनुष्य के कर्म–फल में अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित किया गया है। मनुष्य के आचरण व कर्मानुसार ही जन्नत अथवा जहन्नुम मिलता है।

वर्तमान सन्दर्भ में भी मनुष्य को सदाचरण व सद्कर्म करने के लिए प्रेरित करते है। इससे इसकी वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है।

मनुष्य के लिए सर्वाधिक जिज्ञासा का विषय रहा है–पारलौकिकता से सम्बन्धित प्रश्न। सामान्यतः मनुष्य अपने जीवन में स्वयं से सम्बन्धित प्रश्न उठाता है कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ तथा मृत्यु के उपरांत कहाँ जाऊँगा? क्या मृत्यु के उपरांत भी जीवन है? स्वर्ग–नरक है या नहीं? आदि प्रश्नो का उत्तर इस्लाम धर्म ने भी देने का प्रयास किया है।

इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद को स्वीकार करता है जिसका आधार 'कुरान' है जिसमें ईश्वरीय वचनों को मोहम्मद साहब ने देवदूत के संदेशों के द्वारा प्राप्त किया।इस्लाम धर्म में मनुष्य जीवन को सांसारिक व उच्चतर जीवन में विभाजित किया है। जन्म से मृत्यु तक का जीवन सांसारिक तथा मृत्योपरांत उच्चतर जीवन। जिसकी तीन अवस्थाएँ है– मृत्यु, कब्र (बरजख) तथा पुनरुत्थान। मृत्यु उपरांत की अवस्था को भी जीवन/जिन्दगी ही माना है जो मानव की एक उच्चतर अवस्था है।

रूह (जीव) के बारे में कुरान तथा पैगम्बर मौहम्मद साहब ने सिर्फ इतना ही कहा है कि जीव (रूह) *रब के हुक्म* से है। प्रसिद्ध पूर्वी इस्लामी दार्शनिक मुहम्मद गजाली ने 'मज्नून–सगीर' में दर्शन की भाषा में रूह के बारे में कहा है– ''वह (जीव) द्रव्य है, शरीर नहीं। उसका सम्बन्ध बदन से है, किंतु इस तरह कि न शरीर से मिला न अलग, न भीतर न बाहर, न आधार न आधेय।''[1]

अन्य इस्लामी दार्शनिक बू–अली सीना के अनुसार जीव भौतिक तत्वों के मिश्रण से नहीं बना है। जीव शरीर का अभिन्न अंश नहीं है बल्कि उसका शरीर के साथ पीछे से संयोग हुआ है। हर एक शरीर को अपना–अपना जीव ऊपर से मिलता है।[2]

इस्लाम का दृष्टिकोण यह है कि मौजूदा जिन्दगी अस्थायी है। इसे अवश्य ही मौत पर खत्म हो जाना है, मगर मौत पूरी तरह विनाश नहीं, बल्कि इसके बाद एक और हमेशा रहने वाली जिन्दगी है जो कभी खत्म नहीं होगी। वह मौजूदा जिन्दगी का नतीजा होगी। अगर मौजूदा जिन्दगी नेक कर्म करते गुजारी होगी तो मौत के बाद की जिन्दगी स्थायी आराम की जिन्दगी होगी। लेकिन अगर सांसारिक जीवन में कुफ़्र और नाफ़रमानी का रवैया अपनाया होगा, तो मौत के बाद की जिन्दगी बड़ी तकलीफ़ और अज़ा की जिन्दगी होगी।[3]

इस जिन्दगी के बाद निश्चित रूप से एक दूसरी जिन्दगी है जिसमें अच्छाई का अच्छा और बुराई का बुरा बदला मिलेगा। वह दूसरी जिन्दगी कभी खत्म नहीं होगी, बल्कि हमेशा बाक़ी रहेगी। इस दृष्टिकोण से ज्ञानात्मक और बौद्धिक दोनों दृष्टि से दिल को तसल्ली होती है कि नेकी कभी बेकार नहीं होती, अगर इस सांसारिक जीवन में इसका फल न भी मिला तो भी कोई हरज नहीं क्योंकि एक जगह ऐसी मौजूद है जहाँ इसका फल जरूर मिलता हैं। तो फिर इनसान नेकी पर कायम रहता है, चाहे उसे उसकी अच्छाई का कोई सांसारिक फल मिले या न मिले। ऐसे ही यह ईमान की बुराई का बदला अगर दुनिया में न मिला तो भी एक जगह ऐसी है जहाँ उसका बुरा बदला मिलेगा। यह यक़ीन इनसान के दिल में बुरे कर्मों से बचने का विचार पैदा करता है, चाहे उसे वे तमाम साधन और आसानियाँ हासिल हों जिनसे वह एक गुनहगार जैसी जिन्दगी बसर कर सकें।

नबियों के बताए हुए परलोक–दृष्टिकोण का इनसानी सीरत से गहरा संबंध है। जिन इनसानों का यह आख़िरत का अक़ीदा मज़बूत होगा उनकी सीरत (चरित्र) उतनी ही मज़बूत होगी, और जिनका अक़ीदा व यक़ीन जितना कमज़ोर होगा उनकी सीरत उतनी ही कमज़ोर होगी। यह अक़ीदा भलाइयों का अभिलाषी बनाता है और बुराइयों से नफ़रत करने वाला बनाता है और इस दुनिया का आराम और उसकी रौनक और खुशहाली भी अधिकतर इसी बात पर निर्भर है कि उसके रहनेवाले भलाइयों के अभिलाषी हों और बुराइयों से घृणा करें।[4]

इस्लाम में इंसान के चरित्र और आचरण का विशेष महत्व है। वास्तव में इस्लाम कहते ही, विश्वास धारण करने और भले काम करने को है। इसीलिए अल्लाह ने अपने सभी वायदों के लिए चाहे वे दुनिया से संबंधित हो या आखिरत से ईमान और अच्छे कर्म की शर्त रखी है। कुरआन मजीद में ईमान के साथ अनेकों स्थानों पर सुकर्म का उल्लेख किया गया है। हम यहाँ कुछ आयतें पेश करते है–

''मोमिन, 'यहूदी, 'नसारा' (ईसाई) और 'सावई' कोई हो इन में से जो भी (सच–सच) अल्लाह और आखिरत पर ईमान लाएंगे और भले कर्म करेंगे उनका बदला तो उनके रब के पास है और (आखिरत में) उन्हें न तो कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे।''

–बकर :62

इसका मतलब यह है कि अल्लाह के किसी गिरोह से प्रेम या दुश्मनी नहीं, वह तो यह चाहता है कि इंसान ईमान और नेक कामों की अमूल्य नेमतों से अपनी झोली भर ले। भविष्य की चिन्ता रखने वाले जो व्यक्ति ऐसा करेंगे वे आखिरत में अल्लाह के अज़ाब से सुरक्षित रहेंगे और उसके प्रतिदान के अधिकार होंगे।

''जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये उन्हें हम ऐसे बागों में जगह देंगे जिनके नीचे से नहरें बहती होगी और वे उनमें सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा और पक्का वायदा है और अल्लाह से ज्यादा सच बात करने वाला और कौन हो सकता है? न तुम्हारी कामनाओं से कुछ होता है और न किताब वालों की। जो व्यक्ति भी बुरे काम करेगा उस का फल पायेगा और अल्लाह के हट कर कोई संरक्षक, मित्र और सहायक उसे न मिलेगा (जो उसे सज़ा से बचा सके) और जो कोई नेक काम करेगा–मर्द हो या औरत–यदि वह मोमिन है तो वह जन्नत में दाखित होगा और उस पर तनिक भी जुल्म न होगा।''

–निसा 122–124

इन आयतों से कई बातें स्पष्ट हुई। एक यह कि ईमान और नेक काम का फल जन्नत और उसकी सदैव रहने वाली नेमतों के रूप में अवश्य मिलेगा। दूसरी यह कि मोमिन का साधारण से साधारण नेक काम व्यर्थ नहीं जायेगा। तीसरी यह कि बुरे कामों के बदले दंड मिल कर रहेगा।[5]

मौत की मंजिल से गुजरने के बाद इनसान को कब्र की मंजिल पेश आती है। अपनी मौत से लेकर क़ियामत के आने तक इनसानी रूहे (आत्माएँ) जहाँ रहेंगी उसे ''आलमें बरजख'' कहा जाता है। प्यारे रसूल (सल्ल) की हदियों से मालूम होता है कि आलमें बरजख में भी अजाब और राहत मौजूद हैं जिन लोगों ने जिन्दगी में कुफ़्र और नाफरमानी का रवैया अपनाए रखा होगा उनका अजाब आलमें बरजख यानी कब्र ही से शुरू हो जाएगा और जो दुनिया में सीधी राह पर चलते रहे होंगे उनके लिए कब्र की जिन्दगी ही राहत और आराम की जिन्दगी हो जाएगी।

इस्लाम के अनुसार सभी जीव प्रथम ही प्रथम शरीर में प्रविष्ट हुए है। मृत्यु के बाद पुनर्जन्म को यहां नहीं माना गया है। इस दृष्टि से यह धर्म इसाई और यहूदी धर्मों से मिलता–जुलता है। जब मानव की मृत्यु होती है तब उसका शरीर कब्र में रखा जाता है जहां मृत्यु का फरिश्ता आत्मा को शरीर से पृथक् करता है। तत्पश्चात् वहां दो फरिश्ते 'मुकर' और 'नकीर' मृतक व्यक्ति की आत्मा के कर्मों की परीक्षा करते हैं। फिर

आत्मा को बरजख में रखा जाता है। बरजख मृत्यु और कयामत के बीच की अवस्था है। कयामत–दिवस के आगमन का ज्ञान ईश्वर के सिवाय किसी को नहीं रहता है फिर भी कयामत–दिवस के आगमन की सूचना कुछ चिन्हों से प्राप्त की जा सकती है। उस दिन प्रत्येक जीव अपने प्राचीन शरीर के साथ ही उठता है। उस दिन व्यक्ति के शुभ या अशुभ कर्मों का पारितौषिक या दण्ड सुनाया जाता है। अपने कर्मों का फल मनुष्य को प्राप्त करना पड़ता है। कयामत के दिन कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के कर्म का फल नहीं वहन कर सकता है। कुरान की ये पंक्तियाँ इन विषयों की परिचायक कही जा सकती है।

''उस दिन न मित्र किसी मित्र का सहायक होगा और न कोई सहायता पायेगा।'' (44:2:12)

''जो कुछ उसने अर्जन किया उसका फल अवश्य पायेगा; वह अन्याय से पीड़ित न होगा।''[6] (45:3:1)

प्रायः सभी मनुष्यों के जीवन में किसी न किसी समय ये प्रश्न आये बिना नहीं रहते कि ''मैं कहाँ से आया हूँ?'' और 'कहां जाऊंगा?– 'कोऽहं कुत आयातः' बात स्पष्ट है कि अनभिज्ञ लोग या अल्पज्ञ लोग इन प्रश्नों को टालने का प्रयत्न करते हैं। अधिकांश विद्वान लोग विचार करके थक जाते हैं और उत्तर शायद ही दे पाते हैं। ये प्रश्न सनातन है और खोज सभी देशों में और सभी मतों तथा सभी दर्शनों में की जा रही है। विभिन्न मत वाले लोग परलोक तथा पुर्नजन्म के सम्बन्ध में अपने–अपने विचार भी प्रदर्शित करते रहे हैं। इन सब विचारों पर परामर्श किए बिना अपने–अपने आध्यात्मिक सिद्धान्त स्थापित करना असम्भव नहीं तो, कठिन अवश्य है।

कुरान में बताया गया है कि मरने के बाद व्यक्ति की आत्मा उसके शरीर में लौटाई जाती है और उसके पास दो फरिश्ते आते हैं। वे उससे कुछ प्रश्न पूछते हैं यदि वह व्यक्ति अल्लाह पर ईमान न रखने वाला होता है तो फरिश्ते उस व्यक्ति की कब्र को दोजख बना देते हैं। दोजख में गर्मी, लपटें और जलाने–झुलसाने वाली हवाएं उसके पास आती रहती है और उसकी कब्र इतनी तंग हो जाएगी जिसकी वजह से उसके सीने की पसलियां इधर से उधर हो जाएगी, एक–दूसरे में फंस जाएगी।[7]

इसी प्रकार जो व्यक्ति अल्लाह पर इमान रखने वाला होगा उसके लिए कब्र जन्नत के बगीचों के समान हो जाएगी।

बू–अली सीना ने युनानी दार्शनिकों तथा उनके अनुयायी इस्लामी दार्शनिकों की भांति ईश्वर से प्रथम विज्ञान (= नफ्स), उससे द्वितीय विज्ञान आदि की उत्पत्ति का वर्णन किया है। उसके अनुसार जीव भौतिक तत्वों के मिश्रण से नहीं बना है। जीव शरीर का अभिन्न अंश नहीं है, बल्कि उसका शरीर के साथ पीछे से संयोग हुआ है। हर एक शरीर को अपना–अपना जीव ऊपर से मिलता है।[8]

पैंगबर मुहम्मद को भी लोगों ने जीव के बारे सवाल करके तंग किया था, जिस पर अल्लाह ने अपने पैगम्बर को यह जवाब देने के लिए कहा– ''कह जीव मेरे रब के हुक्म से है।''[9] जब कुरान और पैगम्बर तक को इससे ज्यादा कहने की हिम्मत नहीं है, तो गजाली का आगे कहना खतरे से खाली नहीं होता इसलिए बेचारे ने ''अह्याउल्–उलूम्'' में यह कहकर जान छुड़ानी चाही, कि यह उन रहस्यों में है, जिनको प्रकट करना ठीक नहीं; लेकिन ''मज्नून–सगीर'' में उन्होंने इन चुप्पी को तोड़ना जरूरी समझा इसलिए गजाली दर्शन की भाषा में कहते है– ''वह (जीव) द्रव्य है, शरीर नहीं। उसका संबंध बदन से है, किन्तु इस तरह कि न शरीर से मिला न अलग, न भीतर न बाहर, न आधार न आधेय।''[10]

इस्लाम धर्म 'कयामत का दिन' में विश्वास रखते हैं। इस कयामत के दिन को कई नामों से जाना जाता है। उनके अनुसार इस दिन सभी मुर्दे जिन्दा किए जाएंगे और ईश्वर के सामने उपस्थित होंगे।[11]

मृत्यु के बाद जीवन या पुनरुत्थान इस्लाम धर्म का मुख्य विचार है। कुरान में इसे 'अल–अखिरा' कहा गया है। इस्लाम के अनुसार 'मृत्यु' जीवन का अन्त नहीं है। मृत्यु इस सांसारिक जीवन से उच्चतर जीवन की ओर जाने का मार्ग है। 'जन्नत' (स्वर्ग) और जहन्नुम (नरक) सांसारिक जीवन में किए गए कर्मों का फल है।[12]

इस्लाम धर्म में मृत्यु और पुनरुत्थान के मध्य की अवस्था या बीच का समय 'बरजख' कहा गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'अवरोध या 'बाधा' है। इस अवस्था को कब्र भी कहते हैं। इस प्रकार इस्लाम धर्म में तीन अवस्थाओं का वर्णन किया गया है– मृत्यु, कब्र या बरजख और पुनरुत्थान।[13]

इस्लाम धर्म के अनुसार मनुष्य दुनिया में केवल एक बार जन्म लेता है और ईश्वर–वचन (कुरान) के द्वारा विहित (पुण्य) निषिद्ध (पाप) कर्म करके उसके फलस्वरूप अनंतकाल के लिए स्वर्ग या नर्क पाता है। स्वर्ग में सुन्दर प्रासाद, अंगूरों के बाग, शहद–शराब की नहरें, एक से अधिक सुन्दरियाँ (हूरें) तथा बहुत से तरूण चाकर (गिल्मान) होते हैं। दया, सत्य–भाषण, चोरी न करना आदि सर्वधर्म साधारण भले कामों के अतिरिक्त नमाज, रोजा (उपवास) दान (जमात) और हज (जीवन में एक बार काबा–दर्शन) ये चार मुख्य है। निषिद्ध कर्मों में अनेक देवताओं और उनकी मूर्तियों का पूजन, शराब–पीना, हराम मांस खाना आदि है।

कयामत में पुनरुज्जीवन

जो मनुष्य दुनिया में मरते हैं, वह कयामत (=अन्तिम न्याय) के दिन फरिश्ते इस्त्राफील के नरसिंगे (=सूर) के बजते ही उठ खड़े होंगे। इस तरह के पुनरुज्जीवन को इस्लाम भी दूसरे सामीय (यहूदी, ईसाई) धर्म की भांति मानता है। बद्दुओं में भी कुछ वस्तुवादी थे, जो इसे खामखा की कबाहत समझते थे, जैसा कि बद्दू कवि अल्हाद अपनी स्त्री को सुनाकर कहता है–

''अमोतो सुम्म बअ्स सुम्म नश्रा। इदीसे खुराफात या उम्–अमरू'' (मरना फिर जीना फिर चलना–फिरना। अमरू की माँ! यह तो खुराफात की बातें हैं।) गजाली इस बात को अपने और दार्शनिकों के बीच के तीन बड़े मतभेदों में मानता है। दार्शनिक सिर्फ जीव को अमर मानते हैं, शरीर को वह नश्वर समझते हैं। इस्लाम में कयामत में मुर्दों के जिन्दा उठ खड़े होने को लेकर दो

तरह के मत थे– (1) एक तो अब्दुल्ला बिन् अब्बास जैसे लोगों का जो कि कयामत के बाद मिलने वाली सारी चीजों को आज की दुनिया की चीजों से सिर्फ नाम मात्र की समानता मानते थे– शराब होगी किन्तु उसमें नशा न होगा, आहार होगा किन्तु पेशाब–पाखाना नहीं होगा। इसी तरह शरीर मिलेगा किन्तु यही शरीर नहीं। (2) दूसरा–गिरोह अश्–अरियों का था, जो कि कयामत वाले जिस्म क्या सभी चीजों को इसी दुनिया की तथा बिल्कुल ऐसी ही मानते थे। इनके अलावा तीसरा गिरोह बाहरी विचारों और दर्शन से प्रभावित सूफी लोगों का था जो कहते थे–

"हूरने खुल्दने कौसर् ए वाअज अगर खुश्कर्द ई।
बज्मे मा–हम् शाहिद–ो नक्ल–ो शराबे बेश् नेस्त।।"

(धर्मवक्ता! अप्सरा, बाग और नहर यदि स्वर्ग में हमें खुश करने के लिए है, तो वह हमारी आमोद मंडली और शराब से बेहतर तो नहीं है।)

गजाली तीसरे पथ के पथिक होते हुए भी पहले दो गिरोहों को अपने साथ रखना चाहते थे–

"बहारे–आलमे–हुस्न–श् दिल–ो जाँ ताज मी–दारद्।
ब–रंग स्हाबे–सूरतरा ब–बू अर्बावे–मानी–रा।"

(उस प्रियतम के सौन्दर्य की दुनिया की बाहर आने रंग से सूरत के प्रेमियों के और सुगंध से भाव के प्रेमियों के दिलो–जान को ताजा रखती है।)

खैर! यह तो बहिश्त में मिलने वाली दूसरी चीजों की बात कही। सवाल फिर भी वहीं मौजूद है कयामत में जिन्दा हो उठे को वही पुराना छोड़ा शरीर मिलेगा या दूसरा? अश्–अरियों का कहना था– बिलकुल वही शरीर और वैसी ही आकृति (सूरत)। इस पर प्रश्न होता था– जो चीज नष्ट हो गई उसका फिर लौटकर अस्तित्व में आना असंभव है। और फिर मान लो एक आदमी दूसरे आदमी को मारकर खा गया, और एक के शरीर–परमाणु दूसरे के परमाणु–शरीर बन गये तो हत्यारे का शरीर कयामत में यदि ठीक वही हो जो कि दुनिया में था, तो मारे गये व्यक्ति का शरीर बिल्कुल वैसा ही नहीं हो सकता।

गजाली का मत है, कि कयामत में मुर्दे जिन्दा हो उठेंगे यह ठीक है, शरीर बिल्कुल वही पुराना होगा यह जरूरी नहीं।[14]

सामान्य विचारधारा में कब्रिस्तान से आत्मा और शरीर दोनों ही उठ बैठते है। परंतु प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि शरीर अलग–विलग हो जाता है तो वह शरीर कैसे उठ सकता है? इसके उत्तर में मुहम्मद ने शरीर के एक अंग के रक्षण में अत्यन्त सावधानी बरतने का कहा है। यह अंग भविष्य में ढाँचे के आधार का अथवा उसमें उपयुक्त होने वाले पिंड का काम देता है। मुहम्मद के उपदेशानुसार पृथ्वी के कारण मानव शरीर नष्ट हो जाता है लेकिन उसकी एक अस्थि नष्ट नहीं होती जिसे 'अल–अजीब' कहते हैं। 'अल–अजीब' को 'बीज' की उपमा द्वारा समझाया गया है। जिस प्रकार किसी वृक्ष के बीज का नाश नहीं होता तथा उससे नव–वृक्ष उत्पन्न होता है ठीक उसी प्रकार 'अल–अजीब' भी अंतिम समय तक अविकृत अवस्था में रहती है।

मुहम्मद साहब ने कहा था कि कयामत का जो दिन आने वाला है, उस दिन ईश्वर चालीस दिनों तक वर्षा करेंगे, जिससे यह सम्पूर्ण पृथ्वी बारह हाथ ऊपर तक जलमग्न हो जायेगी और जिस प्रकार पौधे का अंकुर प्रस्फुटित होता है वैसे ही उससे सम्पूर्ण शरीर विकसित होकर उठेंगे।

निष्कर्ष

इस प्रकार इस्लाम धर्म में पुनरुत्थान की अवधारणा अन्य भारतीय धर्मों में निहित पुनर्जन्म से कुछ साम्यता रखती है। परन्तु मृत्यु के उपरान्त की अवधारणा में भिन्नता रखती है। अन्य सभी भारतीय धर्मो की तरह इस्लाम धर्म भी कर्म फल सिद्धांत में विश्वास करता है और स्वीकार करता है कि जैसे कर्म करेंगे मृत्यु के बाद वैसे ही फल जन्नत (स्वर्ग) और जहन्नुम (नरक) नसीब होगी।[15]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दर्शन दिग्दर्शन– राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, 1998*
2. *दर्शन दिग्दर्शन– राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, 1998*
3. *मरने के बाद क्या होगा– बिन्तुल इस्लाम, अनुवाद–कौसर लईक, कर्मजी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014*
4. *मरने के बाद क्या होगा– बिन्तुल इस्लाम, अनुवाद–कौसर लईक, कर्मजी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014*
5. *इस्लाम आप से क्या चाहता है?– सैयद हामिद अली, मर्कजी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014*
6. *धर्म दर्शन की रूपरेखा– डॉ. हरेन्द्रप्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1998*
7. *मरने के बाद क्या होगा– बिन्तुल इस्लाम, अनुवाद–कौसर लईक, कर्मजी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014*
8. *दर्शन दिग्दर्शन– राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, 1998*
9. *"कुल् अं र्–रूहो मिन्–अमे रब्बी"–कुरान*
10. *दर्शन दिग्दर्शन– राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, 1998*
11. *Belief in youm at qiyamah or the day of the great rising is one of the articales of muslim faith. The resurrection is spoken of under various names such as at saa'h (which means the hour, and occurs forty times); yaum at akhir (the last day, occurs twenty six times); yaum at din ....yaum al-talaq, (the day of meeting) ; yaum al-hasrat(the day of regret), etc. Spirit of Quran:- Maulana Mohammad Razi Khan Afridi, Dr. Mohammad Ilyas Navaid, Anmol publications pvt. ltd., New Delhi, 2006.*
12. *A faith in the life hereafter is the last of the basic principles of Islam. The word generally used in the Holy Quran to indicate this life is 'al-akhira'. Death, in the light of the plain teaching of the Quran, is not the end of life. ....The Holy Quran accords to faith in the Future life an imprtance which is next only to faith in Allah. ..... Physical death only releases it from its earthly*

existence and opens for it the door of a higher life and a wide vista of progress..... वही

13. *The state between death and Resurrection is called Barzakh which leterally means a thing that intervenes between two things or an obstacle or a hindrance................ Thus the three states, death. the grave and Resurrection are spoken of where the grave undoubtedly stands for Barzakh. वही*
14. *दर्शन दिग्दर्शन– राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, 1998*